अल्बर्ट श्वाइटज़र

स्पेंसर, हिंदी : विदूषक

अल्बर्ट श्वाइटज़र

स्पेंसर, हिंदी : विदूषक

यह कहानी एक ऐसे इंसान की है जिसने आम लोगों के सेवा में अपना जीवन समर्पित किया. उसका नाम था **अल्बर्ट श्वाइटज़र**. यह कहानी उसकी ज़िन्दगी पर आधारित है. अल्बर्ट श्वाइटज़र के बारे में ऐतिहासिक तथ्य अंत में दिए हैं.

एक ज़माने की बात है.....

एक छात्र था अल्बर्ट श्वाइटज़र. वो वसंत की छुट्टियां मनाने, यूनिवर्सिटी से अपने घर वापिस जा रहा था.

"यहाँ कितना सुन्दर है!" उसने खुद से कहा जब वो अपने गाँव एल्सेस पहुंचा. उसके पिता वहां चर्च के पादरी थे. उसे फूलों की भीनी-भीनी खुशबू आ रही थी. बगीचों में सेब के पेड़ों पर फूल लगे थे.

अल्बर्ट तेज़ी से अपने माता-पिता के घर की ओर चला. उसने अपनी माँ को गले लगाया और पिता से हाथ मिलाए. फिर वो ऊपर के धूप वाले कमरे में अपना सामान रखने गया.

उस रात बहुत देर तक अल्बर्ट अपने माता-पिता के साथ बातें कीं. इसलिए वो सुबह देर तक सोता रहा. जब वो उठा तो सूरज की तेज़ रोशनी खिड़की से अन्दर आ रही थी और मधुमक्खियाँ बगीचे में एक फूल से दूसरे फूल पर पराग चुन रही थीं.

अल्बर्ट यह देख इतना खुश हुआ कि उससे पलंग पर और ज्यादा देर लेटा नहीं गया. उसने अपने कपड़े बदले और फिर अपने गाँव के पास के जंगल में घूमने निकल गया.

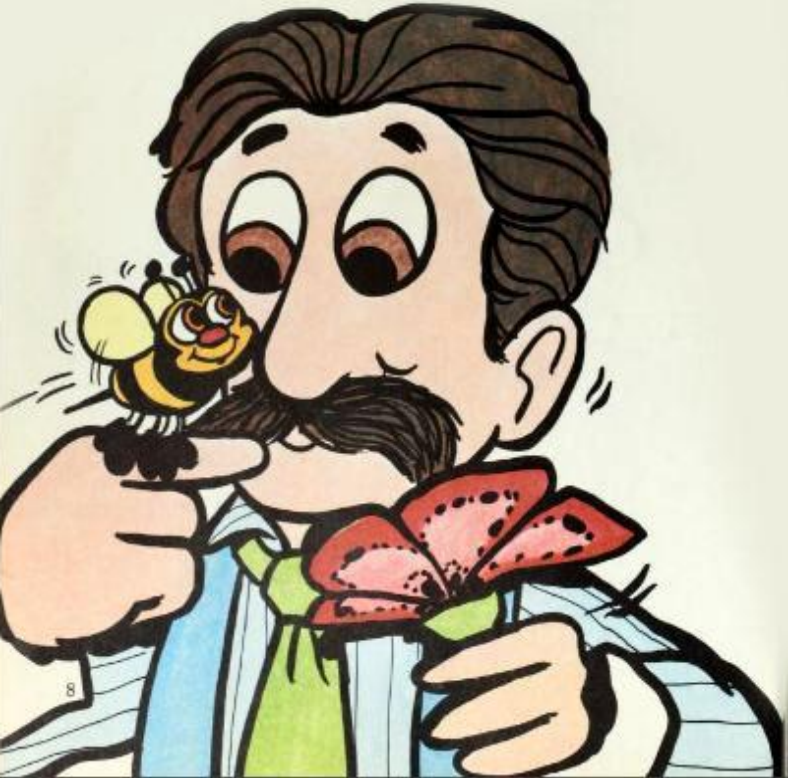

वो अभी कुछ ही दूर गया था कि उसे एक दुखभरी सिसकने की आवाज़ सुनाई दी. जिस पगडंडी पर वो जा रहा था वहीं झाड़ी के नीचे से वो आवाज़ आई.

"यह आवाज़ किसी छोटे ज़ख़्मी जानवर की है," अल्बर्ट ने कहा. उसने जब आसपास की कंटीली झाड़ियों को साफ़ किया तो उसे जाल में फंसी एक युवा लोमड़ी दिखी.

"इस वसंत के सुहाने मौसम में तुम्हें जाल में नहीं फंसना चाहिए," अल्बर्ट ने कहा.

अल्बर्ट ने लोमड़ी को जाल से मुक्त किया और उसे जंगल में जाते हुए देखा.

"गरीब प्राणी," अल्बर्ट ने कहा. "उसे अपनी ज़िन्दगी उतनी ही कीमती है जितनी मुझे मेरी है. और क्यों नहीं? हरेक का जीवन बहुमूल्य है."

उसके बाद अल्बर्ट एक गिरे लट्ठे पर बैठ गया और अपनी जिंदगी के बारे में सोचने लगा. उसने विशेषकर अपनी जिंदगी और उसकी उपयोगिता के ऊपर चिंतन किया. उसका परिवार बहुत अच्छा था और वो उससे बहुत प्रेम करता था. वो खुद अच्छी सेहत में था. वो बहुत प्रतिभावान संगीतज्ञ और होशियार छात्र था.

"प्रकृति ने मुझे कितने उपहार दिए हैं," अल्बर्ट ने खुद से कहा. "मुझे उनकी कद्र करनी चाहिए और दूसरों के साथ उन्हें बाँटना चाहिए."

फिर अल्बर्ट अचरज करने लगा – वो इन उपहारों को और लोगों के साथ कैसे बांटेगा. "अभी मैं 21 साल का हूँ," कुछ देर बाद उसने खुद से कहा. "मैं खुद को नौ साल का और समय दूंगा. उस दौरान मैं अपनी सभी प्रतिभाएं विकसित करूंगा. फिर जब मैं तीस साल का होऊँगा तब मैं लोगों की सेवा में लग जाऊँगा."

अल्बर्ट ने सर उठा कर देखा. उसे लगा जैसे वो लोमड़ी अभी भी उधर ही खड़ी थी, और झाड़ियों में से उसे ताक रही थी.

"तुम्हारा क्या विचार है, रेनार्ड," उसने कहा. "क्या तुम्हें मेरी योजना पसंद आई?"

"तुम्हारी योजना वैसी ही है जैसी कोई भी युवक वसंत में बनाता है," लोमड़ी ने कहा. "जब तुम तीस साल के होगे तब तुम उसके बारे में सब कुछ भूल जाओगे. तब तुम वही करोगे जो अन्य आदमी करते हैं. तब तुम भी बढ़िया, महंगा सूट पहनोगे और धन कमाओगे, और अचरज करोगे कि तुम दुनिया में और ज्यादा प्रसिद्ध क्यों नहीं हुए."

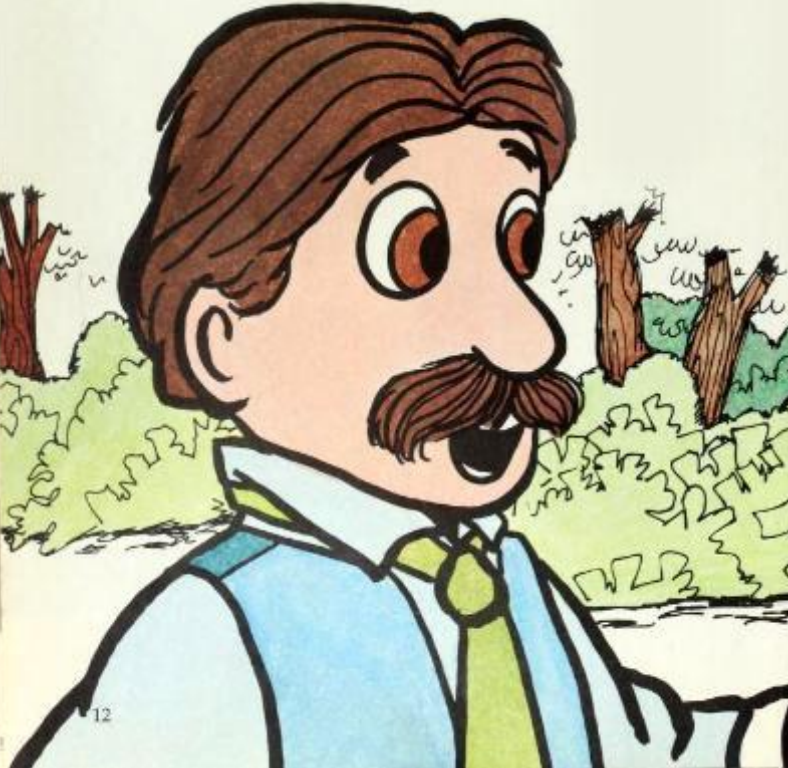

यह सुनकर अल्बर्ट हंसा. उसे यह पता था कि लोमड़ी उससे बात नहीं कर रही थी. वो खुद अपनी अंतरात्मा से बात कर रहा था. उसकी अंतरात्मा उसे अडिग बनने के लिए ललकार रही थी. तब अल्बर्ट ने एक निर्णय लिया - कि वो लोमड़ी की बात को हमेशा याद रखेगा. अब वो अपना यह निर्णय कभी नहीं भूलेगा.

"हम देखेंगे रेनार्ड," अल्बर्ट ने कहा.

"तुम मुझे रेनार्ड के नाम से क्यों बुलाते हो?" लोमड़ी ने पूछा.

"क्योंकि किस्से-कहानियों में लोमड़ी को हमेशा रेनार्ड के नाम से ही बुलाया जाता है," अल्बर्ट ने कहा. "अब तुम मेरे साथ चलो. फिर मैं जब चाहूँगा तब मैं तुमसे, अपनी योजना के बारे में चर्चा करूंगा. मैं तुम्हारे बारे में किसी और को नहीं बताऊँगा. वो हम दोनों के बीच एक रहस्य रहेगा."

"हाँ, उसे एक रहस्य ही बने रहने देना," लोमड़ी ने कहा. "अगर माँ-बाप तुम्हारी योजना को सुनते तो फिर वो इलाज के लिए तुम्हें किसी पागलखाने में भेजते."

अल्बर्ट दुबारा हंसा. फिर वो घर वापिस गया पर उसने अपने निर्णय के बारे में माता-पिता से एक शब्द भी नहीं कहा. अगले नौ सालों में अल्बर्ट ने ऐसे कई काम किए जिन्हें अन्य नौजवान कभी नहीं करते.

वो एक मशहूर पियानो-वादक बना. जिन चर्चों में पुराने ऑर्गन-पियानो थे वहां उसने अनेकों संगीत समारोह आयोजित किये.

अल्बर्ट अपने पिता की ही तरह एक पादरी बना. वो हर हफ्ते स्ट्रासबोर्ग चर्च में प्रवचन देता था.

अल्बर्ट ने पुराने ऑर्गन-पियानो के विषय पर, एक पुस्तक लिखी. उसने महान संगीतकार जोहान्न सेबेस्टियन बाख के बारे में भी एक किताब लिखी. फिर अल्बर्ट, कॉलेज का प्रिंसिपल बना.

"अल्बर्ट एक जीनियस है," लोगों कहते. "उसे इतने सारे काम करने का भला समय कहाँ से मिलता है? क्या वो रात को सोता भी है?"

"इसमें क्या बड़ी बात है," रेनार्ड हमेशा यही कहता. यह कहते हुए लोमड़ी हमेशा जम्भाई लेती, जिससे उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं देता. शायद यह इसलिए था क्योंकि अल्बर्ट के अलावा लोमड़ी किसी और को दिखाई ही नहीं देती थी.

भाग्यवश अल्बर्ट की कद-काठी काफी मज़बूत थी. वो बहुत कम नींद से ही गुज़रा कर लेता था. जब वो पच्चीस साल का हुआ तो कुछ ऐसा हुआ जिससे उसे अचरज और चिंता दोनों हुईं.

वो क्या था, क्या तुम्हें पता है?

वो एक लड़की से मिला. उसका नाम हेलेन था. वो बहुत सुन्दर थी. उसके बाल और आँखें काली थीं. अल्बर्ट, रेनार्ड के अलावा भी किसी और से भी अपनी योजना के बारे में चर्चा करना चाहता था. वो अपनी योजना के बारे में हेलेन की राय जानना चाहता था.

"पर क्या वो मेरी बात समझेगी?" उसने पूछा.

रेनार्ड हँसा, "नहीं," उसने कहा. "वो समझेगी कि तुम पागल हो और फिर वो दुबारा तुमसे कभी बात भी नहीं करेगी."

"मैं इस बात को उससे छिपाकर नहीं रख सकता हूँ," अल्बर्ट ने कहा. "मुझे उसे बताना ही होगा."

इससे पहले कि अल्बर्ट दूसरों के प्रति अपने जीवन को समर्पित करने की बात, हेलेन को बताता, उसे हेलेन के बारे में एक आश्चर्यजनक बात पता चली.

"मैं बहुत सौभाग्यशाली हूँ," हेलेन ने एक दिन उससे कहा. "मेरी सेहत अच्छी है, और परिवार भला है, और मैं काफी होशियार हूँ. मैं अपने उपहारों को दूसरों के साथ बाँटना चाहती हूँ. इसलिए जब मैं पच्चीस साल की होऊंगी तब मैं खुद को, लोगों की सेवा में समर्पित करूंगी. उसके लिए मैं नर्सिंग की पढ़ाई करूंगी."

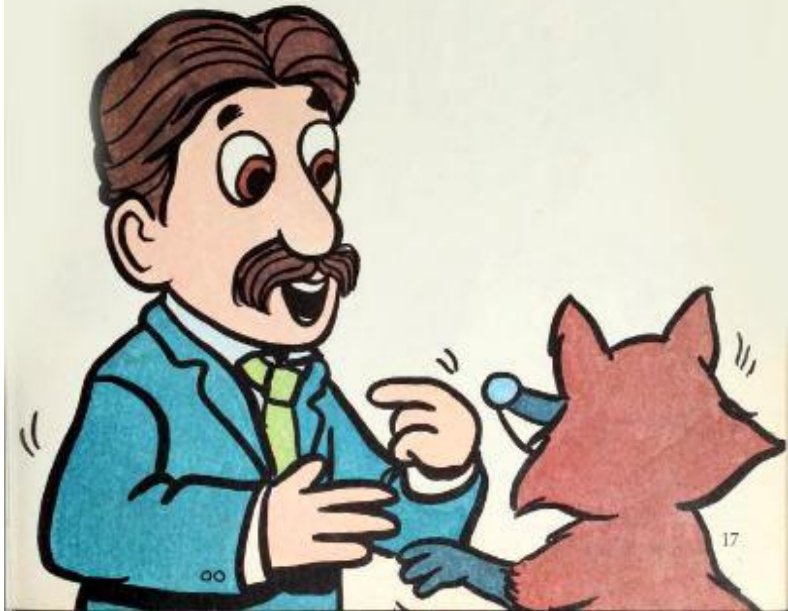

यह सुनकर अल्बर्ट को बहुत ताज्जुब हुआ. उसका गाने का मन हुआ. उसे ऐसा लगा जैसे उसे हेलेन के सामने शादी का प्रस्ताव रखना चाहिए. बाद में उसने ऐसा किया भी.

पर शादी से पहले अल्बर्ट को कुछ और निर्णय भी लेने थे, और साथ में बहुत कुछ और काम भी करना था. अब वो उन्तीस साल का था. अंत में उसे समझ में आया कि वो मानवता की सेवा कैसे करेगा.

"मैं अफ्रीका के कांगो देश में जाना चाहता हूँ," उसने हेलेन से कहा. "मैंने वहां के लोगों के बारे में काफी कुछ पढ़ा है. वहां बहुत से अफ्रीकी लोग बीमार हैं. उनका इलाज करने के लिए मैं एक डॉक्टर बनना चाहता हूँ."

"एक डॉक्टर?" हेलेन चिल्लाई. "पर उसके लिए तुम्हें अगले छह-सात साल एक मेडिकल छात्र जैसे बिताने होंगे!"

अल्बर्ट की बात को समझना शायद हेलेन के लिए भी बहुत कठिन था. पर उसने देखा कि अल्बर्ट अपने निर्णय पर दृढ़ था. अल्बर्ट तो उसके चुने हुए मार्ग से हटाना आसान नहीं था. उसके बाद अल्बर्ट ने इसके बारे में अपने माता-पिता और करीबी दोस्तों को भी लिखा. उसने लिखा कि अब वो स्ट्रासबोर्ग यूनिवर्सिटी के मेडिकल स्कूल में दाखिला लेगा.

"तुम पागल हो गए हो!" उसके दोस्तों ने कहा.

"मैं यह नहीं मानता," अल्बर्ट ने कहा. फिर उसने कॉलेज में अपने कमरे से, जहाँ वो प्रिंसिपल था अपना सारा सामान हटाया और वो ऊपर की मंजिल के एक छोटे कमरे में शिफ्ट हुआ. वहां से उसने अपना काम शुरू किया.

जल्द ही उसे अँधेरी, ठंडी प्रयोगशालाओं और उबाऊ लेक्चर्स का अनुभव हुआ. उसने मनुष्य की शरीर-रचना और केमिस्ट्री पढ़ते हुए घंटों बिताए. जब वो पढ़ते-पढ़ते थक जाता तब वो यूनिवर्सिटी के पास के चर्च में जाकर वहां पर ऑर्गन-पियानो बजाता. उससे वो दुबारा खुश होता.

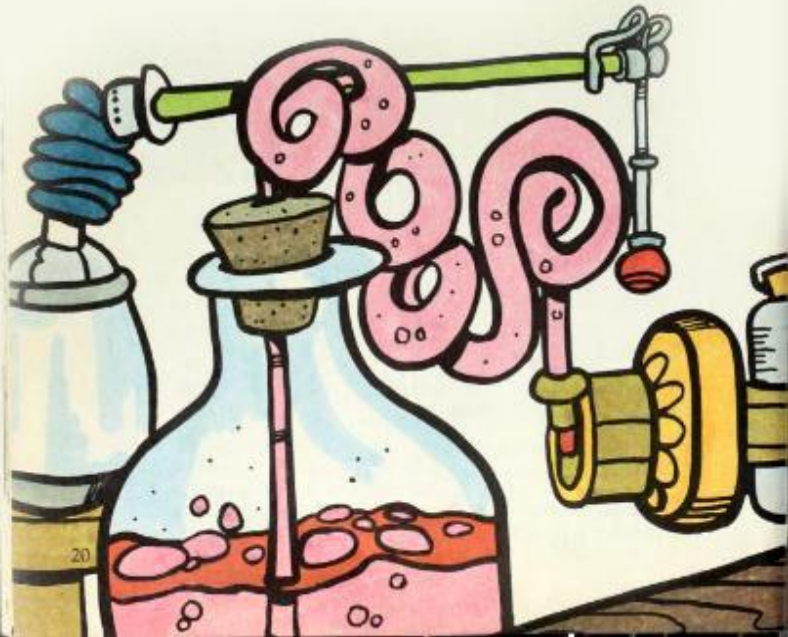

अब वो दुबारा से संगीत के समारोहों में भाग लेने लगा था और फिर से पुस्तकें लिखने लगा था. उसने किसी अन्य छात्र जैसे ही यूनिवर्सिटी में कड़ी मेहनत की.

"कभी-कभी मुझे बुरा लगता है, कि मैं आखिर तुमसे क्यों मिला," रेनार्ड अक्सर उससे कहता. "तुम्हें देखकर मैं खुद को एक आलसी लोमड़ी समझने लगा हूँ."

"तुम एक आलसी लोमड़ी हो," अल्बर्ट ने जवाब दिया, "और मैं एक हट्टा-कट्टा किसान हूँ - एक घोड़े जितना ताकतवर. थोड़ा ज्यादा काम करने से मुझे कोई नुक्सान नहीं होगा."

"हाँ यह ठीक है. ज्यादा काम करने से अल्बर्ट को कोई तकलीफ नहीं हुई. उससे वो और शक्तिशाली बना."

"कितनी अजीब बात है," उसके एक प्रोफेसर ने कहा. "वो जितना अधिक काम करता है, उसकी काम की क्षमता उतनी ही ज्यादा बढ़ती है."

"यह इसलिए है क्योंकि वो अपने काम के प्रति पूरी तरह समर्पित है," दूसरे आदमी ने कहा. "वो अपना काम दिलो-जान से करता है. वो काम और संगीत में अपनी पूरी ऊर्जा लगाता है. वो किसी भी काम को बेमनी से नहीं करता है, इसलिए वो बहुत कुछ हासिल कर पाता है."

1911 में अल्बर्ट ने अपनी परीक्षा पास की, बाद में उसने एक वर्ष, इंटर्न की हैसियत से काम किया. उसके बाद वो *पेरिस मिशनरी सोसाइटी* के पास गया.

"मैं अफ्रीका जाना चाहता हूँ," उसने कहा, "और उसमें मुझे आपकी मदद चाहिए. मैं पेशे से एक डॉक्टर हूँ. मुझे किसी ऐसी जगह भेजें जहाँ पर अस्पताल हो. मुझे कोई वेतन नहीं चाहिए. मैंने कई पुस्तकें लिखी हैं और उनकी रॉयल्टी से मेरा गुज़ारा चल जायेगा."

"उनके लिए इस प्रस्ताव को मना करना बहुत मुश्किल होगा," रेनार्ड लोमड़ी ने कहा.

रेनार्ड ने सही ही कहा था. मिशनरी सोसाइटी के सदस्यों ने अल्बर्ट का प्रस्ताव स्वीकार किया. उसके बाद अल्बर्ट यह खुशखबरी हेलेन को सुनाने, स्ट्रासबोर्ग किया.

"वो मुझे लाम्बारेने नाम की जगह पर भेज रहे हैं," उसने कहा. वो अपने साथ अफ्रीका का नक्शा लेकर गया था. उसमें उसने हेलेन को वो स्थान दिखाया. वो जगह ओगोवे नदी के तट पर थी, और देश का नाम था *गैबॉन.* गैबॉन, अफ्रीका के पश्चिमी तट पर स्थित था.

"वो तो बिल्कुल भू-मध्यरेखा (इक्वेटर) पर स्थित है," हेलेन ने कहा. "वहां तो बेहद गर्मी होगी."

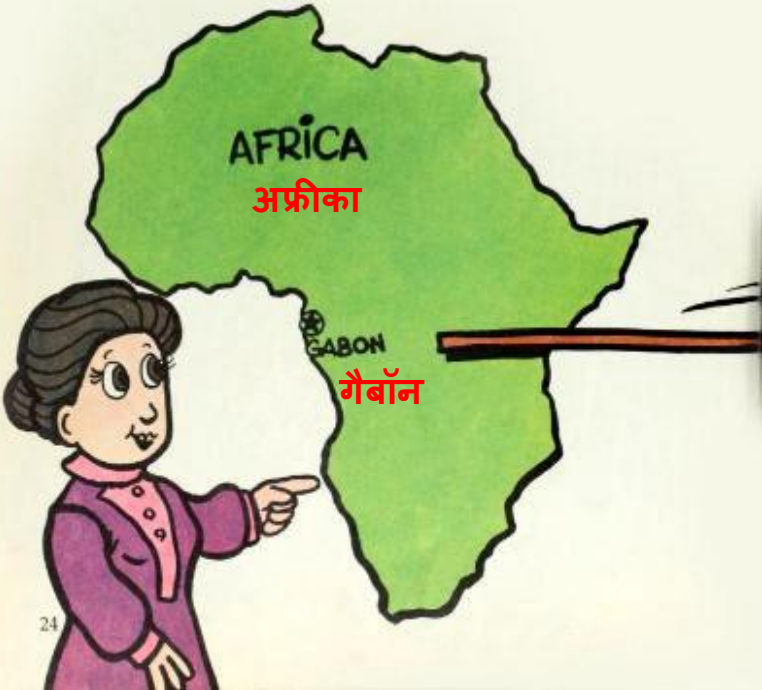

"तुम क्या खुद को गैबॉन में खुद को एडजस्ट कर पाओगी?" अल्बर्ट ने पूछा. "क्या तुम अफ्रीका में मेरे साथ अकेली रह पाओगी? वहां पर कोई और यूरोपियन नहीं होंगे."

"क्यों नहीं, मैं वहां आराम से तुम्हारे साथ रहूंगी," हेलेन ने कहा. "तुमसे मिलने के बाद मेरी यही इच्छा रही है."

उसके बाद अल्बर्ट और हेलेन ने शादी की. उसके कुछ महीनों बाद वो एक स्टीमर में सवार हुए और उन्होंने अफ्रीका की ओर कूच किया.

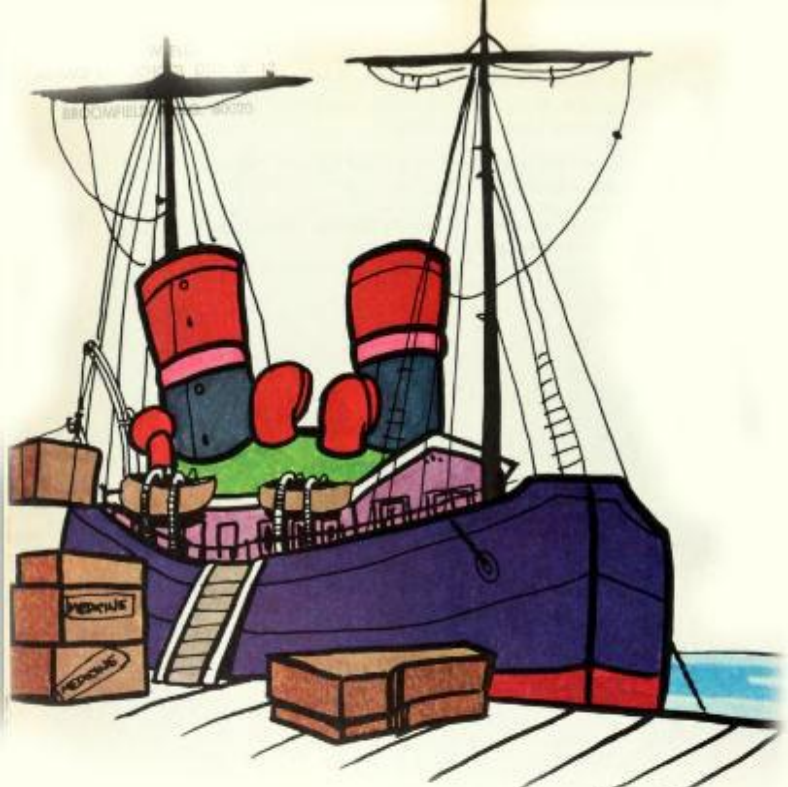

अल्बर्ट और हेलेन के पास बहुत सामान था. उसमें गठरियाँ और बक्से थे जो दवाइयों और अस्पताल के सामान से भरे थे. एक बड़ी क्रेट में वो विशेष पियानो था जो *पेरिस बाख सोसाइटी* ने अल्बर्ट को भेंट किया था. पियानो के अन्दर सीसा लगा था जिससे अफ्रीका के जंगलों की नमी, पियानो की लकड़ी को ख़राब न करे.

ओगोवे नदी के मुहाने पर एक शहर था जिसका नाम था *केप लोपेज़*. जब अल्बर्ट और हेलेन वहां पहुंचे तब उनका सामान उतारकर एक छोटे स्टीमर में लादा गया. वो नदी पर चलने वाला एक छोटा स्टीमर था जो उन्हें उनकी मंजिल - लाम्बारेने के बिल्कुल नज़दीक ले जाता.

"अंत के कुछ मील हम डोंगी से तय करेंगे," अल्बर्ट ने कहा. वो नदी में तैर रहे गेंडों को देख रहा था.

"मुझे वहां कुछ ख़ास पसंद नहीं आएगा," रेनार्ड ने कहा.

लोमड़ी भी अल्बर्ट और हेलेन के साथ आई थी. पर यहाँ उसे कुछ अच्छा नहीं लग रहा था. उसे काफी डरा लग रहा था. उसे नदी के तट से लगे घने जंगल दिखे. उसने उन डरावने जानवरों को भी देखा था जो पेड़ों की छाँव में छिपे थे.

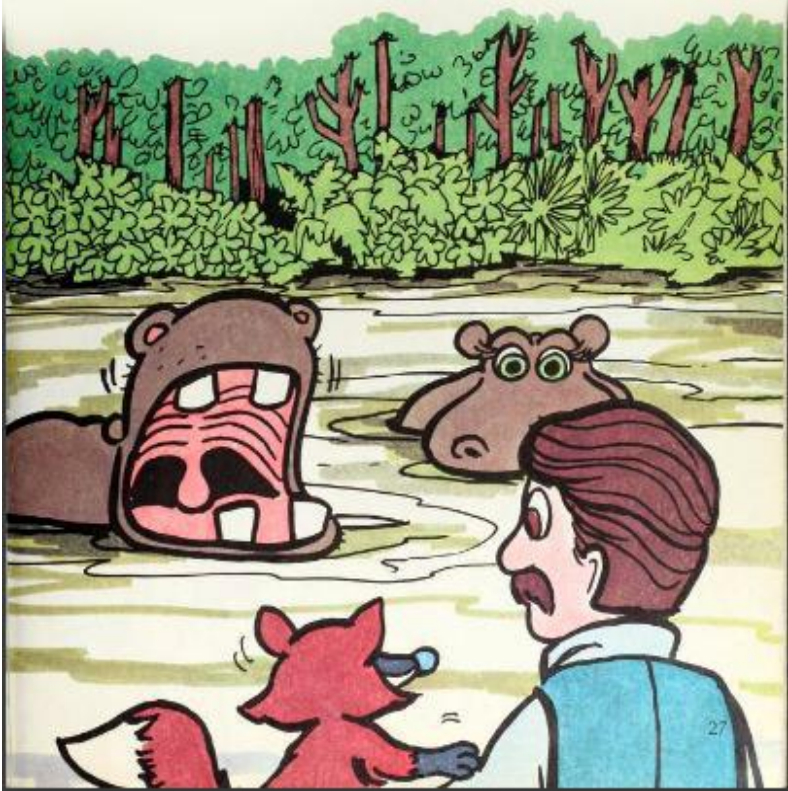

जब वो *केप लोपेज़* से 250 मील दूर थे तब उन्होंने स्टीमर छोड़ा और फिर वो छोटी-छोटी नावों में सवार हुए.

"जैसे ही और छोटी नावें आएँगी हम उनमें आपका बाकी सामान भेज देंगे," स्टीमर के कप्तान ने उनसे वादा किया. "जहाँ तक पियानो का सवाल है, हम अपनी भरपूर कोशिश करेंगे. पर उसे लादना और भेजना आसान नहीं होगा. क्योंकि वो पूरे तीन टन का है!"

"अगर हमें जंगल में बिना संगीत के रहना पड़ेगा, तो फिर हम वही करेंगे," अल्बर्ट ने कहा. उसके बाद वो और हेलेन एक छोटी नाव में बैठकर वहां से चले.

"मैं एक अब सभ्य लोमड़ी बन गई हूँ," रेनार्ड ने कहा. "पता नहीं मुझे यह सब पसंद है या नहीं."

अल्बर्ट ने रेनार्ड की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया. वो उस अस्पताल को देखने को बहुत आतुर था जहाँ वो बीमार अफ्रीकी लोगों का इलाज करेगा. फिर बहुत लम्बे इंतज़ार के बाद नाव नदी के एक मोड़ पर आई. नाव पर खड़े एक ऊँचे आदमी ने उंगली के इशारे से कहा, "यह है लाम्बारेने."

अल्बर्ट को वहां क्या दिखा. आपको क्या लगता है?

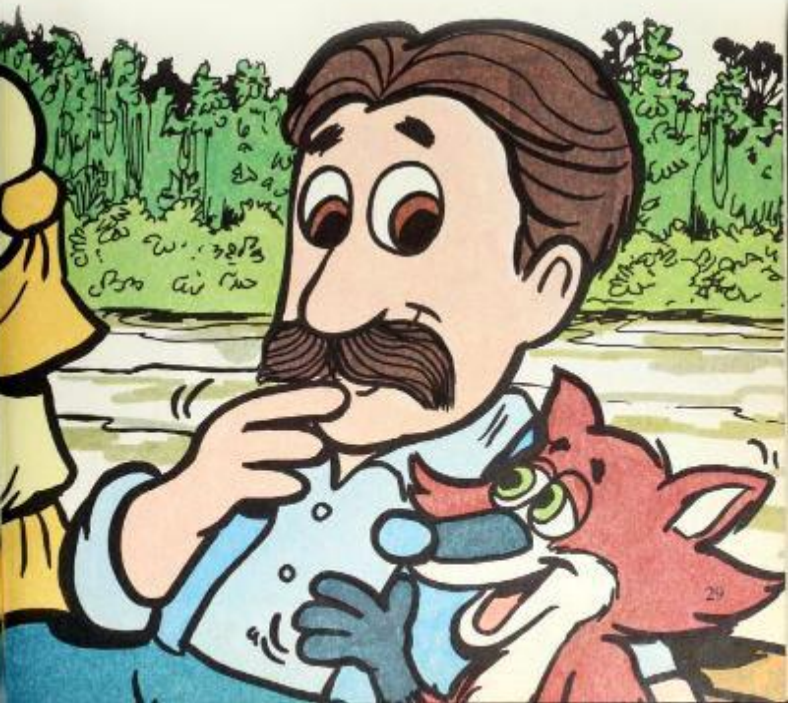

नदी के तट पर उसे एक साफ़ मैदान दिखा. वहां कुछ टूटी-फूटी झोपड़ियाँ थीं. उनके पीछे घना जंगल था जो उन्हें निगल जाने को तैयार था.

"क्या यह मेरा अस्पताल है?" अल्बर्ट चिल्लाया. उसे वो देखकर, बड़ा धक्का लगा.

"मुझे पता था कि काम आसान नहीं होगा," हेलेन ने कहा. "पर इतनी ज्यादा कठिनाई होगी, इसका मुझे कोई अंदाज़ नहीं था!"

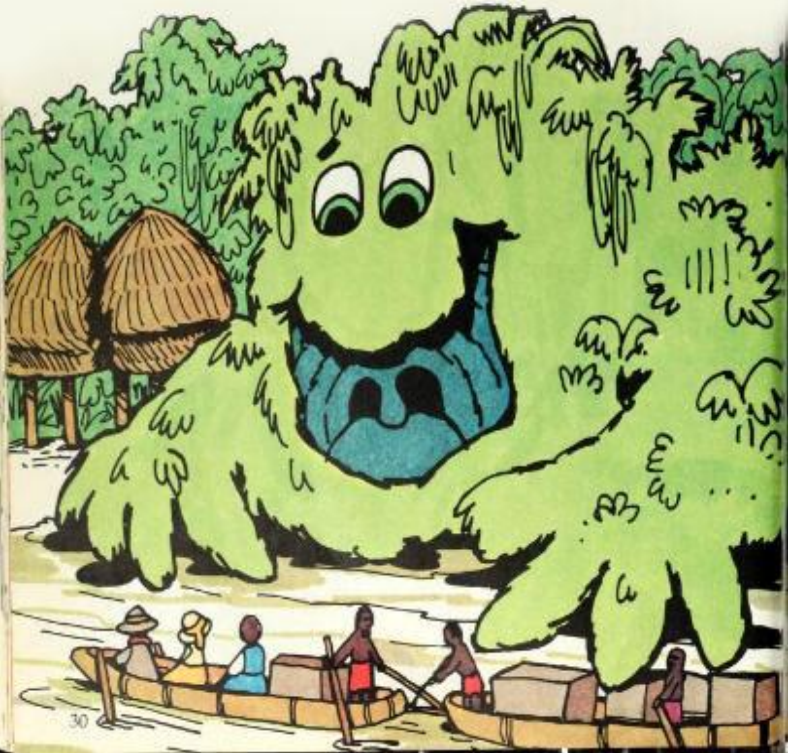

उस रात अल्बर्ट और हेलेन एक छोटी झोपड़ी में सोए. झोपड़ी, बल्लियों पर खड़ी थी और उसका फर्श ज़मीन से ऊंचा था, जिससे नदी अगर उफान पर भी हो, तो भी घर बहे नहीं.

"बहुत अच्छा!" रेनार्ड ने कहा. उसने उन तमाम कीड़े-मकौड़ो को देखा जो फर्श पर इधर-उधर दौड़ रहे थे. "काश उन्होने किसी प्रकार इन मकड़ियों, तिलचट्टों और कीड़ों को यहाँ से दूर रखा होता."

अल्बर्ट ने एक लम्बी सांस भरी. "तुमने ठीक कहा," उसने रेनार्ड से कहा. "मुझे इन कीड़े-मकौड़ो की कोई खास परवाह नहीं है. पर यह मत सोचना कि मैंने हार मानी है. मैं अब यहीं रहूँगा. और क्योंकि यहाँ अस्पताल नहीं है, इसलिए मैं यहाँ नया अस्पताल बनाऊँगा!"

अगले दिन से अल्बर्ट और हेलेन ने अपना काम शुरू किया. उस खुले मैदान में मुर्गियों का एक दबड़ा था. उन्हें उसमें अपना क्लिनिक बनाने का निश्चय किया. उन्होंने फर्श को समतल और साफ़ किया और दीवारों पर पुताई की. फिर अल्बर्ट ने दवाइयां रखने के लिए लकड़ी के शेल्फ बनाए.

"ठीक है," रेनार्ड ने कहा, "पर यह स्ट्रासबोर्ग की प्रयोगशाला जैसा नहीं है, क्यों?"

अल्बर्ट ने अपना सर हिलाया. "जिस अस्पताल में मैं इंटर्न था, यहाँ वैसा भी नहीं है. पर जब तक हम कुछ बेहतर नहीं बनाते, हमें इसी से काम चलाना होगा."

“मुझे तुम्हारा जवाब पहले से ही पता था,” लोमड़ी ने कहा. “कोई भी समर्पित व्यक्ति यही कहेगा. तुमने इस काम को बिल्कुल समय पर ख़त्म किया है.”

“तुम किस बात का ज़िक्र कर रहे हो?” अल्बर्ट ने पूछा.

“आओ, ज़रा बाहर आकर देखो,” रेनार्ड ने कहा.

उसके बाद लोमड़ी, मुर्गी के दबड़े के बाहर निकली. अल्बर्ट उसके पीछे-पीछे गया और उसने नदी की ओर देखा.

वहां पर दर्जनों छोटी-छोटी नावें खड़ी थीं, और हरेक नाव में कई लोग सवार थे.

"खबर फ़ैल चुकी है कि लाम्बारेने में एक डॉक्टर आया है," रेनार्ड ने कहा. "यह मरीज़ तुमसे इलाज कराने आए हैं."

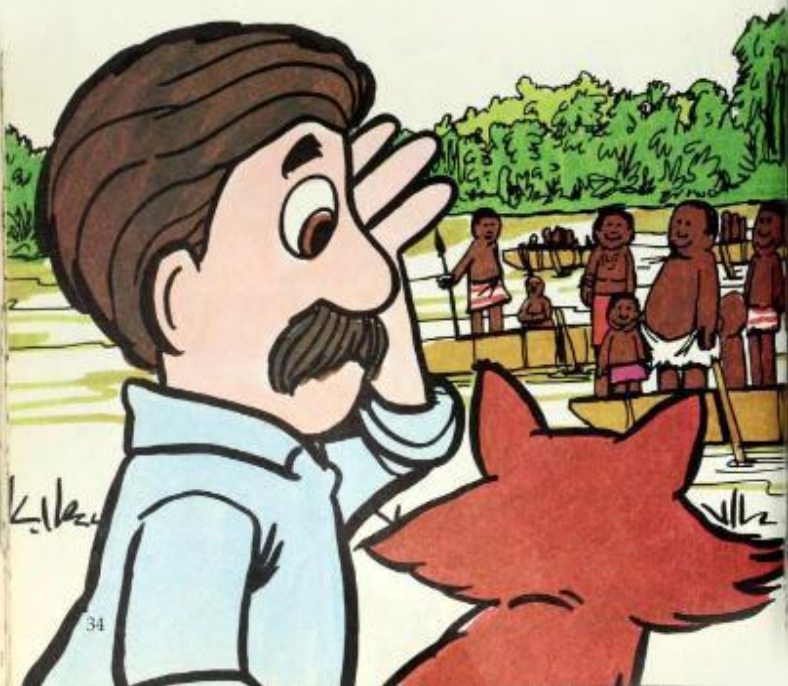

"पर यहाँ तो बहुत लोग हैं!" अल्बर्ट भीड़ को देखकर चिल्लाया. तभी कुछ बीमार लोग अल्बर्ट के सामने लाए गए.

"तुम सोच रहे थे कि तुम यहाँ अकेले ही डॉक्टरी का अभ्यास करोगे, क्यों?" लोमड़ी ने पूछा.

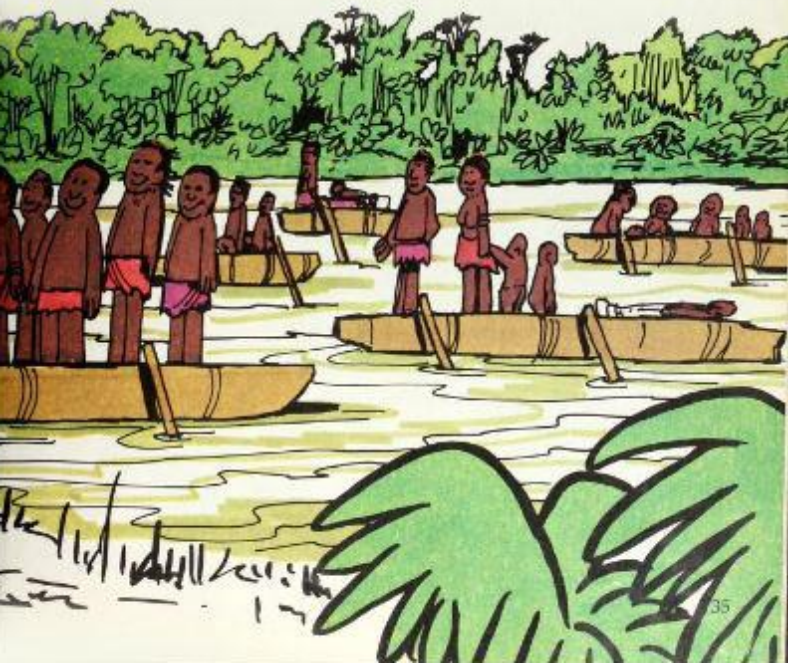

अल्बर्ट ने "ऑपरेशन टेबल" के लिए एक कैंप-बेड का उपयोग किया. हेलेन ने अल्बर्ट की मदद की.

ज़्यादातर मरीजों को तून (महोगनी) के जंगलों में काम करते, पेड़ काटते हुए, उन्हें उठाते हुए चोटें लगीं थीं. कुछ को मलेरिया था. कुछ को दस्त थे. कुछ को एक विशेष मक्खी *त्सी-त्सी फ्लाई* ने काटा था. अगर अल्बर्ट उनकी तुरंत मदद नहीं करता तो वे बेहोश हो जाते और फिर शायद दुबारा कभी आँख नहीं खोलते.

"यहाँ कितना कुछ करने को है," अल्बर्ट ने अस्पताल में पहला दिन समाप्त होने के बाद कहा.

"तुम्हें याद है कि कॉलेज में प्रोफेसर तुम्हारे बारे में क्या कहते थे," रेनार्ड ने अल्बर्ट को याद दिलाते हुए कहा. "तुम जितना अधिक करोगे, तुम उतना ही ज्यादा कर पाओगे, क्योंकि तुम उसे अपने दिलो-जान से करते हो."

तभी एक ऊंचा स्थानीय आदमी अल्बर्ट के पास आया. "क्या डॉक्टर को कुछ मदद की ज़रुरत है?" उस आदमी ने पूछा. वो फ्रेंच में बोल रहा था.

"मेरा नाम जोसफ है," उस आदमी ने कहा. "जोसफ अज़ावामी. अगर आप चाहें तो मैं आपका असिस्टेंट बन सकता हूँ. मैं बहुत ताकतवर हूँ और कई बातें जानता हूँ."

अल्बर्ट मुस्कुराया, "तुम क्या-क्या जानते हो, जोसफ?" उसने पूछा.

"मुझे इंग्लिश और फ्रेंच आती हैं," जोसफ ने कहा. "साथ में मैं आठ अफ्रीकी भाषाएँ भी जानता हूँ. अगर आपने मुझे कोई बात बताई तो मैं उसे भूलूंगा नहीं."

"बहुत अच्छा," अल्बर्ट ने कहा. "हम देखेंगे कि तुम कैसे असिस्टेंट बनोगे."

यह सुनकर वो ऊंचा आदमी हंसा. “मैं कल सुबह आऊँगा,” उसने वादा किया. “मैं आपको जो कुछ दिखाऊँगा उसे देख आप बहुत खुश होंगे.”

उसके बाद वो मुड़ा और जंगल में गायब हो गया. रेनार्ड लोमड़ी अब अल्बर्ट के पैर के पास आकर बैठ गई. “मुझे लगता है कि यह एक लम्बी दोस्ती की शुरुआत है,” उसने कहा.

रेनार्ड की बात सच निकली. उसकी बात अक्सर ठीक ही निकलती थी. जोसफ बहुत कुशल था और उन कुशलताओं की अल्बर्ट और हेलेन को बेहद ज़रुरत थी.

जोसफ पहले बावर्ची रह चुका है इसलिए उसे शरीर रचना के बारे में कुछ पता है. अक्सर वो कहता, "इस आदमी के *'मटन वाले पैर'* में मैं दर्द है." फिर अल्बर्ट *'मटन वाले पैर'* की अपने दिमाग में कल्पना करता और दर्द कहाँ है उस जगह को समझ जाता है.

जोसफ पढ़ना नहीं जानता था. पर वो बोतलों में रखी दवा की गोलियों को पहचान सकता था. जल्द ही अस्पताल में आने वाले किस मरीज़ को, क्या दावा देनी है वो जोसफ अच्छी तरह समझ गया था.

फिर वो ऑपरेशन में भी अल्बर्ट की मदद करने लगा. जब कभी किसी मरीज़ को ऑपरेशन के लिए लाया जाता तो हेलेन उसे नशा देने के लिए ईथर लेकर तैयार रहती. जोसफ पास में खड़ा रहता था. वो हमेशा साफ़-सुथरा और चौकन्ना रहता था. उसे इस बात पर गर्व था. वो रबर एक दस्ताने पहनता और ऑपरेशन के समय अल्बर्ट को औज़ार पकड़ता था.

कुछ दिनों के बाद अल्बर्ट का सारा मेडिकल सामान आ पहुंचा. उन्हें बड़ी-बड़ी नावों में लाया गया. उन नावों को विशाल पेड़ों के मोटे लट्ठों से बनाया गया था. 3-टन भार के पियानो को भी अल्बर्ट के घर में ले जाया गया. जब अल्बर्ट दिन के काम से थक जाता तो फिर वो आराम और सकून के लिए पियानो बजाता था.

"मेडिकल की पढ़ाई से जब तुम थक जाते थे तो भी तुम यही करते थे," रेनार्ड ने कहा.

"मैं अब और ज्यादा परेशान हूँ," अल्बर्ट ने कह. "मुझे बहुत दुःख है. मेरे दिल पर भारी बोझ है. रेनार्ड, यहाँ पर लोगों को बहुत सी बीमारियाँ और दुःख हैं. अक्सर उनका दर्द, मौत से भी ज्यादा भयानक होता है.

"फिर तुम यहाँ क्यों रह रहे हो?" रेनार्ड ने उसे याद दिलाते हुए कहा. "तुम दुबारा घर वापिस जा सकते हो. ऐसा करने से तुम्हें कोई नहीं रोकेगा."

"मैं अब अपने वतन वापिस नहीं जा सकता," अल्बर्ट ने कहा. "यहाँ मुझे इन लोगों की मदद करनी ही है. वे मेरे भाई-बहन हैं. और ऐसी ज़िन्दगी किस काम की, जो किसी नेक और मुश्किल काम के लिए समर्पित न हो? सिर्फ आराम की ज़िन्दगी जीने से क्या फायदा?"

"हाँ, तुम तो ऐसा नहीं कर सकते, यह मुझे पक्का पता है!" रेनार्ड ने कहा.

उसके बाद अल्बर्ट ने बहुत मन लगाकर पियानो बजाया और और उस सुन्दर संगीत की झंकारों से कमरा गूँज उठा. उसके बाद वो उठा और बाहर बचे हुए काम करने गया. मेडिकल स्कूल में भी वो ऐसा ही करता था. वो जितना ज्यादा करता था, वो उतना ही अधिक और कर पाता था.

कुछ महीनों के अन्दर खुले मैदान में उन्होंने अस्पताल के लिए कई और इमारतें बनाई थीं. उनमें से एक बिल्डिंग की दीवारें और छत उन्होंने स्टील की नालीदार चादरों की बनाई. अब मुर्गी के दबड़े की जगह वो उसका इस्तेमाल करने लगे थे. अस्पताल का कीमती सामान रखने के लिए उन्होंने एक सुरक्षित स्टोर भी बनाया. मरीजों के रहने के लिए छोटी-छोटी झोपड़ियाँ भी बनाई थीं. उनके बनने से पहले मरीज़, पेड़ों के नीचे ही रहते थे.

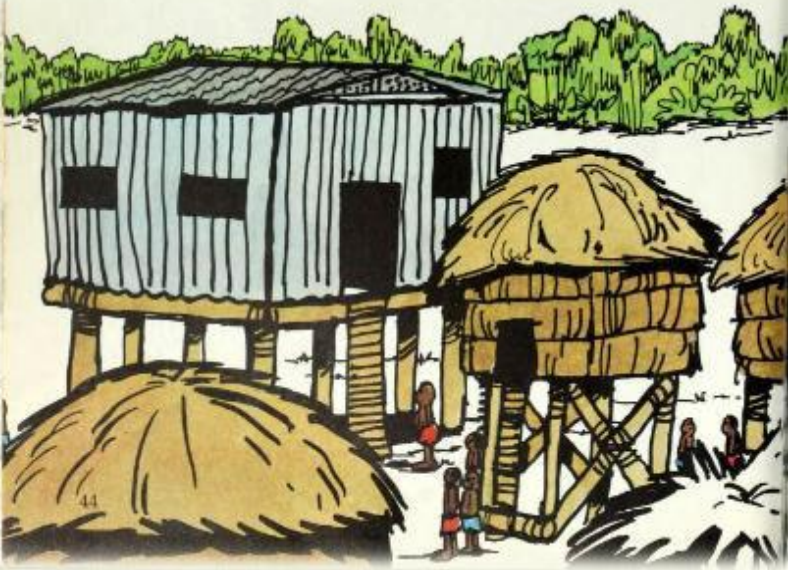

"मुझे लगता है कि हमारा अस्पताल बहुत अच्छा है," जोसफ ने गर्व से कहा.

"मुझे लगता है कि पूरे अफ्रीका में बहुत कम ही अस्पताल इतने अच्छे होंगे. मुझे लगता है कि लाम्बारेने के डॉक्टर के असिस्टेंट को अब एक पत्नी चाहिए."

"यह तो बहुत अच्छा विचार है, जोसफ," अल्बर्ट ने कहा. "तुम शादी क्यों नहीं करते?"

"क्योंकि मैंने अब तक दहेज़ के लिया पर्याप्त धन इकट्ठा नहीं किया है," जोसफ ने कहा.

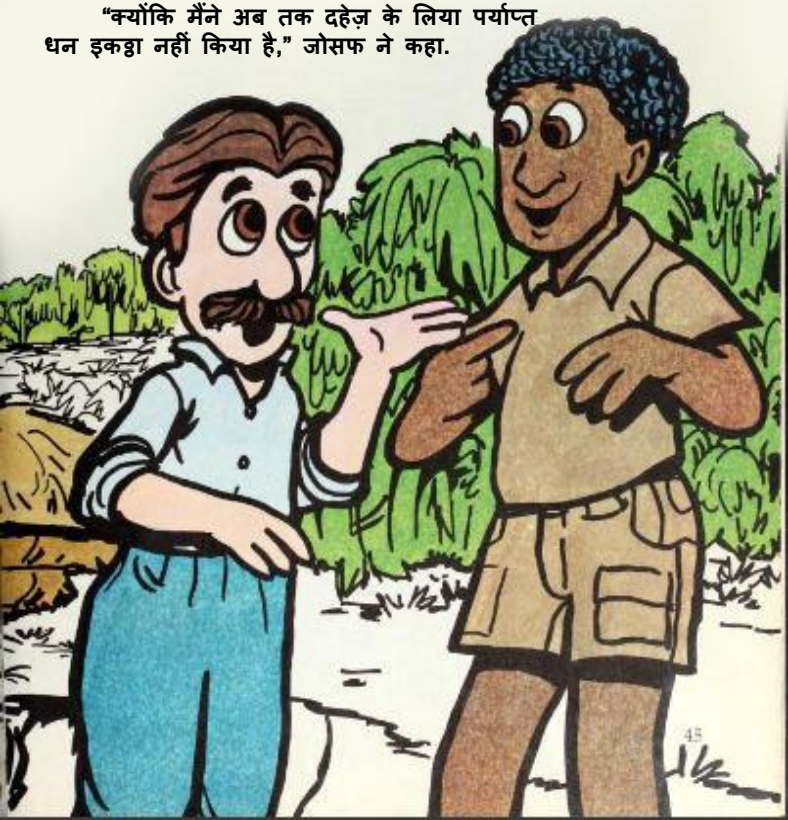

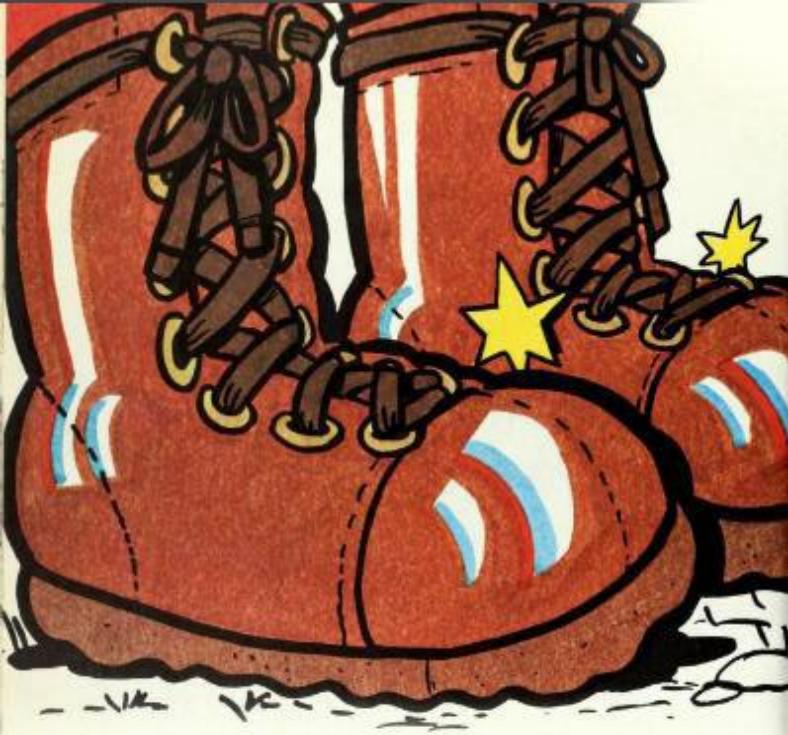

यह सुनकर अल्बर्ट को कोई ताज्जुब नहीं हुआ. उस समय गैबन में हर आदमी को शादी के लिए पत्नी को, धन देकर खरीदना पड़ता था. अल्बर्ट, जोसफ के जूतों की ओर देखता रहा.

"जोसफ, तुम एकदम नए और चमकीले जूते पहने हो," उसने कहा. "अगर तुम्हें पत्नी की इतनी ज़रुरत थी तुमने इतने महंगे जूते क्यों खरीदे?"

"डॉक्टर का असिस्टेंट जूते पहने, यह ज़रूरी है," जोसफ ने उत्तर दिया.

उसके बाद जोसफ नदी पर आए स्टीमर पर गया. वो जानना चाहता था कि अस्पताल के लिए कुछ नई सप्लाई तो नहीं आई थी.

रेनार्ड ने मज़ाक में कहा. “यह बात सही भी है,” उसने कहा. “डॉक्टर के विशेष असिस्टेंट को चमकीले, नए जूते ज़रूर पहनने चाहिए. मुझे लगता है कि डॉक्टर के असिस्टेंट को और बहुत सी चीज़ें चाहिए होंगी और वो अपने जीवन में पत्नी खरीदने के लिए कभी पैसे नहीं बचा पाएगा.”

अल्बर्ट ने अपना सिर हिलाया. उसने जोसफ के बारे में सोचना बंद कर दिया. कुछ देर बाद जोसफ नदी से दौड़ा-दौड़ा वापिस आया. उसे अब अपने महंगे, चमकीले जूतों की कोई परवाह नहीं थी. “डॉक्टर! डॉक्टर! बड़ा अनर्थ हो गया!” उसने रोते हुए कहा. “स्टीमर का कप्तान बुरी खबर लाया है,” जोसफ ने कहा. “अब यूरोप में युद्ध छिड़ गया है.”

यह बुरी खबर सुनकर अल्बर्ट का कलेजा बैठ गया. उसे पहले से ही इस बात का डर था. 1914 में जर्मन और फ्रेंच लोगों के बीच काफी मनमुटाव था. और अब दोनों देशों के बीच युद्ध छिड़ गया था. अब उसका और हेलेन का क्या होगा? वे दोनों जर्मन थे पर फ्रांस के इलाके में रहते थे.

फिर हेलेन भी घर से बाहर आई. वो भी काफी परेशान लग रही थी. "अब क्या होगा?" उसने पूछा.

"क्या पता?" अल्बर्ट ने उत्तर दिया. "हो सकता है वो हमारा अस्पताल बंद कर दें और हमें यहाँ से वापिस भेज दें. भला यह बात मैं अपने मरीजों को किस तरह समझाऊँगा? मैं उन्हें इंसान के पागलपन के बारे में कैसे बताऊँगा? कैसे लोग हैं यह, जो एक-दूसरे को क़त्ल करने के लिए विवश करते है."

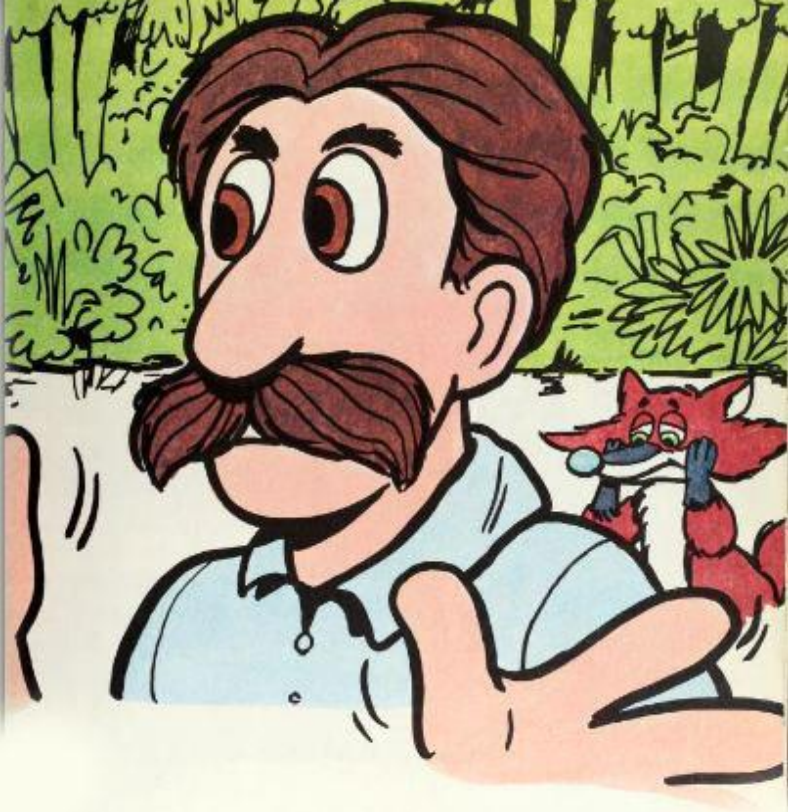

कड़ी मेहनत करते और बोझ ढोते अब अल्बर्ट के कंधे झुक गए थे. अफ्रीका में समर्पित जीवन बिताते हुए और लोगों की मदद करते हुए उसे जीवन की पवित्रता का अंदाज़ हो चुका था. उसे सभी जीवन की पवित्रता का एहसास होने लगा था. वो न केवल इंसानों पर सभी जीवित प्राणियों को – पौधों, जानवरों, कीड़ों को भी पवित्र मानता था.

जल्द ही लाम्बारेने का अस्पताल बंद हो गया. मरीजों को अपने-अपने घर भेज दिया गया. दवाइयों की देखभाल के लिए सिर्फ जोसफ ही बाकी बचा.

अल्बर्ट और हेलेन को, फ्रांस वापिस ले जाया गया. फिर सात साल बाद ही अल्बर्ट, लाम्बारेने के अस्पताल को दुबारा देख पाया.

कुछ दिनों के लिए अल्बर्ट और हेलेन बौर्डिओक्स में रहे. वे वहां नज़रबंद रहे. फिर उन्हें पिरानीज़ पहाड़ियों में स्थित एक बौद्ध-विहार में रखा गया. वहां पर ऐसे बहुत से लोग थे जो युद्ध के कारण विस्थापित हुए थे, और अपने घर वापिस नहीं जा पाए थे.

"वहां पर बहुत से विद्वान् लोग होंगे, अल्बर्ट," रेनार्ड ने कहा. लोमड़ी भी बौद्ध-विहार में गई. लोमड़ी हर जगह अल्बर्ट के साथ जाती और उसकी चमकीली आँखों से कुछ भी नहीं छिपता था. "यह विद्वान पूरी दुनिया से यहाँ पर आए हैं," लोमड़ी ने अपनी बात ज़ारी रखी. "एक समझदार आदमी उनसे बहुत विवेक सीख सकता है."

यह सुनकर अल्बर्ट ने क्या किया होगा? तुम्हें क्या लगता है?

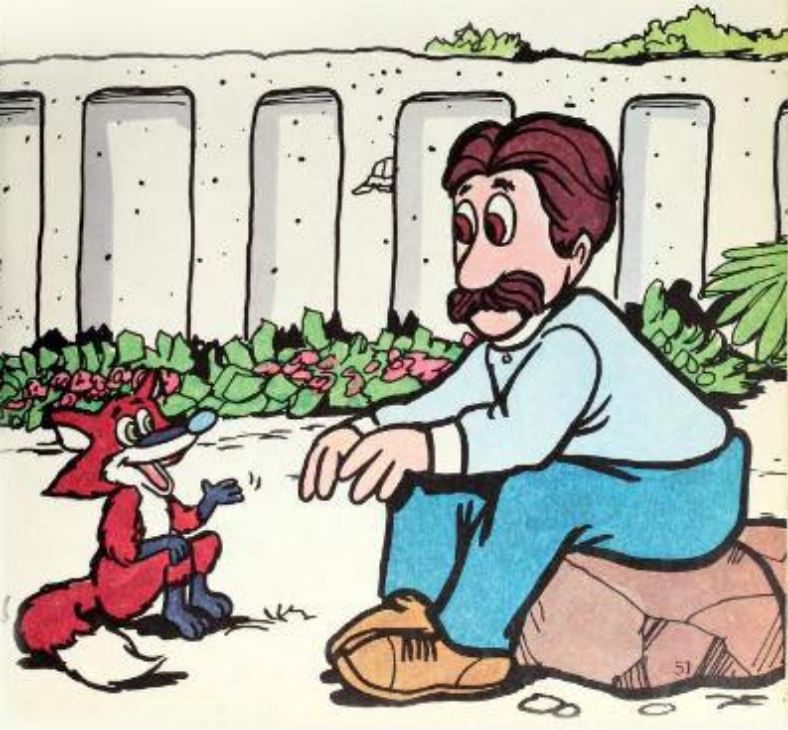

अल्बर्ट ने उन विद्वानों से खूब चर्चा की. उसने धर्म और दर्शन शास्त्र पर उनसे बहस की.

"ऐसा लग रहा है जैसे तुम दुबारा छात्र बन गए हो," रेनार्ड ने कहा.

"बिल्कुल!" अल्बर्ट ने कहा. "इंसान को सारी ज़िन्दगी छात्र बने रहना चाहिए!"

फिर अल्बर्ट ने दुबारा से लिखना शुरू किया और संगीत का अभ्यास शुरू किया. जब उसके पास पियानो या ऑर्गन नहीं होता तब वो किसी संदूक या मेज़ पर अपनी उँगलियों से अभ्यास करता. वो हमेशा संगीत की धुन को अपने दिमाग में सुनता था.

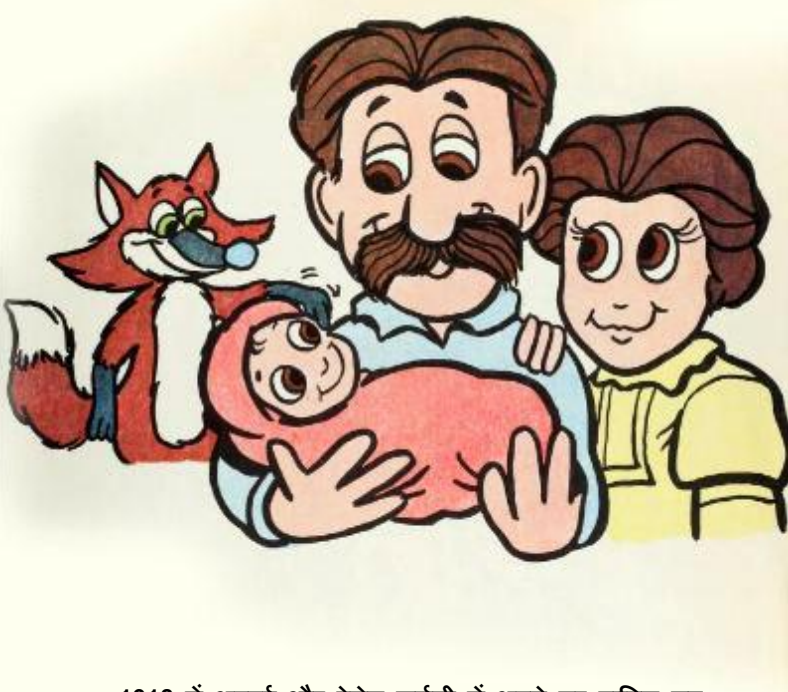

1918 में अल्बर्ट और हेलेन जर्मनी में अपने घर वापिस गए. तभी पहला महायुद्ध समाप्त हुआ था. तब हेलेन ने एक लड़की को जन्म दिया. उस समय अल्बर्ट की उम्र 44 साल की थी.

"अब क्या तुम यूरोप में ही रहोगे?" रेनार्ड ने पूछा. "तुम उस छोटी बच्ची को तो लाम्बारेने नहीं ले जाओगे. तुम्हें पता है कि वो जगह, यूरोपियन लोगों की सेहत के लिए ठीक नहीं है!"

"मैं बच्ची को वहां नहीं लेकर जाऊँगा," अल्बर्ट ने निश्चय किया, "पर जैसे ही दवाइयों, उपकरण और नई इमारतों का इंतजाम होगा वैसे ही मैं लाम्बारेने वापिस चला जाऊँगा. मुझे वहां जाना ही होगा. वहां के लोग मेरे अपने ही लोग हैं, क्यों?"

फिर अल्बर्ट अफ्रीका वापिस गया और हेलेन, स्ट्रासबोर्ग में बच्ची के साथ रही.

जब अल्बर्ट लाम्बारेने वापिस पहुंचा तो उसने पाया कि अस्पताल में सिर्फ टीन की चादरों वाला हाल ही बाकी बचा था. पर उसकी भी छत गायब थी.

"जंगल ने सब कुछ निगल डाला," जोसफ ने कहा, "वो भी झोपड़ियों और स्टोर को खा गया. यहाँ पर ऐसा ही होता है."

"फिर हमें उन्हें दुबारा से बनाना होगा," अल्बर्ट ने कहा. और फिर वो काम में जुट गया.

जल्द ही अल्बर्ट का नया अस्पताल बनकर तैयार हुआ. एक अन्य डॉक्टर अब अल्बर्ट की मदद करने वहां आया. नया डॉक्टर बिल्कुल सही वक़्त पर आया क्योंकि तभी वहां पेंचिश और दस्त की महामारी शुरू हुई. अल्बर्ट ने बहुत लगन और मेहनत से काम किया फिर भी इलाके में महामारी से बहुत से लोगों की मृत्यु हुई. अंत में अल्बर्ट बहुत दुखी हुआ.

"वो मेरी बात सुनते क्यों नहीं?" उस ने रोते हुए कहा. "मैंने उनसे नदी का पानी पीने को सख्ती से मना किया है. वो पानी गन्दा है और महामारी का कारण है. मैं कितना बेवकूफ हूँ कि मैं यहाँ आया!"

"ठीक है डॉक्टर," जोसफ ने कहा. "आप पृथ्वी पर ज़रूर बेवकूफ होंगे. पर स्वर्ग में आपको कोई भी बेवकूफ नहीं बुलाएगा."

जोसफ के शब्द सुनकर अल्बर्ट को कुछ दिलासा मिली. कुछ समय के बाद पेंचिश और दस्त की महामारी समाप्त हुई. पर अस्पताल में हमेशा भीड़ रहती थी और वहां जगह की बेहद तंगी थी.

"हमें एक बड़े अस्पताल की ज़रुरत है," अल्बर्ट ने रेनार्ड से कहा, "और मुझे वो जगह पता है जहाँ हम अपना नया अस्पताल बनाएंगे."

फिर अल्बर्ट मोटरबोट से नदी पर दो मील दूर ऊपर की ओर गया. वहां पर 200-एकड़ का एक साफ़ मैदान था. "कितनी सुन्दर है यह जगह!" अल्बर्ट ने रेनार्ड की ओर चिल्लाते हुए कहा.

"जंगल यहाँ दुबारा से आ जायेगा," रेनार्ड ने चेतावनी दी, "और बारिश के मौसम में नदी उफन कर ऊपर आएगी."

"हम हर घर को खम्बों पर खड़ा करेंगे, जिससे उनका स्तर नदी से ऊंचा हो," अल्बर्ट ने कहा. "बची जगह में हम फलों के पेड़ लगायेंगे, सब्जियां और अनाज उगायेंगे."

रेनार्ड ने एक गहरी सांस लेते हुए कहा, "समर्पण एक अच्छी बात है," उसने कहा, "पर उसके लिए बहुत श्रम करना पड़ेगा."

"मरने के बाद हम जमकर आराम करेंगे, रेनार्ड," अल्बर्ट ने हँसते हुए कहा. "अभी तो हमें बहुत काम करना बचा है!"

उस साल पूरी सर्दियों में जो मरीज़ कुछ अच्छे थे उन्होंने नए अस्पताल के निर्माण के लिए काम किया. उनके परिवार के सदस्यों और मित्रों ने भी इस काम में हाथ बंटाया. अल्बर्ट ने उन्हें श्रम के बदले में भोजन दिया और कुछ उपहार भी – चम्मच, खाना पकाने के बर्तन, कम्बल और मच्छरदानियाँ.

अस्पताल का निर्माण ख़त्म होने के बाद लोगों ने नदी के पास बड़ा जश्न मनाया. दूर-दूर से लोग नावों और मोटरबोट में आए. उन्होंने पुराने और नए अस्पताल के बीच तमाम चक्कर लगाए और सारा उपकरण और सामान नए स्थान पर लाये. लोगों ने अपनी छोटी-छोटी नावों में सामान को ढोया. फिर लोगों ने नए अस्पताल के उदघाटन पर खूब ख़ुशी मनाई – लोग खूब नाचे-गाए.

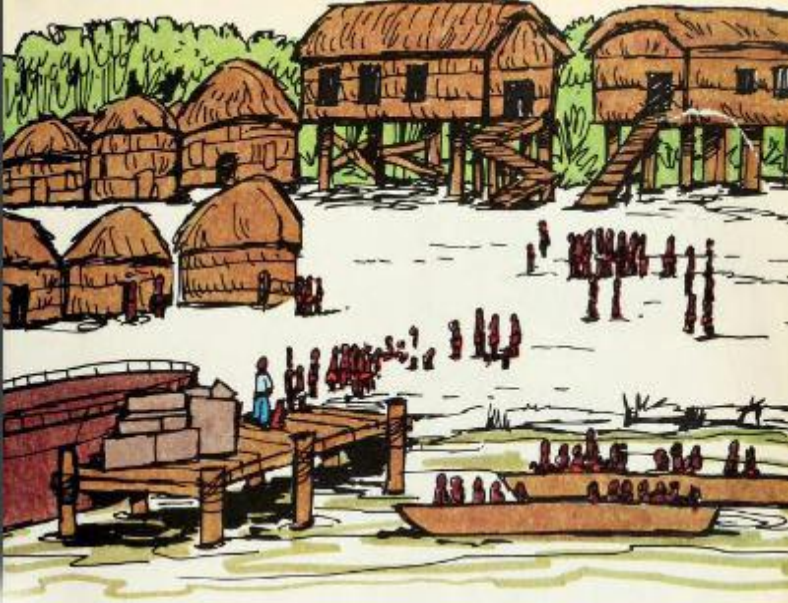

"क्यों, कितना बढ़िया समारोह था?" अल्बर्ट ने कहा.

वो बहुत खुश था.

"हाँ, बहुत अच्छा था," रेनार्ड ने कहा. उसने मरीजों के लिए बनी चालीस झोपड़ियों को देखा और खम्बों पर बनी अन्य इमारतों को भी देखा. लाम्बारेने के नए अस्पताल में, छह-सात सौ लोग एक साथ रह सकते थे.

"यहाँ बहुत से गाँव भी इतने बड़े नहीं होते," लोमड़ी ने कहा.

समय बीतता गया और फिर दुबारा से यूरोप में युद्ध छिड़ा. पर इस बार अल्बर्ट लाम्बारेने में ही रहा. हेलेन भी उसके साथ आकर रहने लगीं. अल्बर्ट ने वहां बहुत मेहनत की – पर उसने हमेशा समय निकालकर – जीवन की पवित्रता और उसके प्रति अपने समर्पण के बारे में लिखा.

"अब तुम थक गए होगे?" रेनार्ड ने कहा. "तुम आराम क्यों नहीं करते?"

"मेरी इंसानियत पैसे जैसी है," अल्बर्ट ने कहा. "अगर मैं उसे गुल्लक में बंद करके रखूँ तो मैं उसके साथ कुछ नहीं कर सकता. पर अगर मैं उसे दूसरों पर खर्च करता हूँ, तो फिर पता नहीं क्या जादू होगा?"

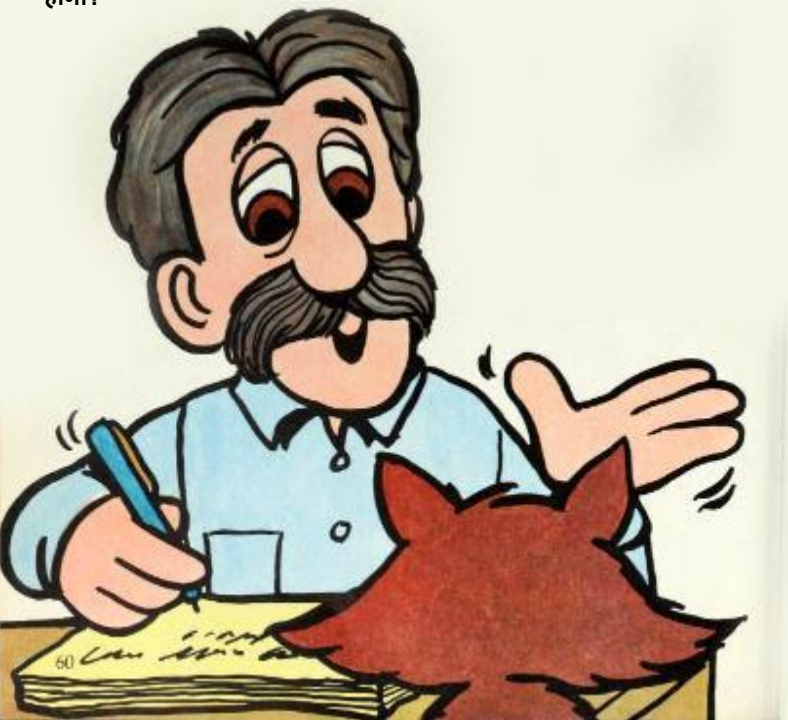

धीरे-धीरे अल्बर्ट के लाम्बारेने में किये काम और उसकी निष्ठा के बारे में पूरी दुनिया को पता चला. फिर अनेकों सरकारों, यूनिवर्सिटीज ने उसे पुरुस्कार दिए. इंग्लैंड की महारानी एलिज़ाबेथ ने उसे *आर्डर ऑफ़ मेरिट* दिया. 1952 में, स्टॉकहोल्म से एक दूत आया और उसने अल्बर्ट से *नोबल पुरुस्कार* स्वीकार करने का आग्रह किया.

अल्बर्ट ने *नोबल पुरुस्कार* सहर्ष स्वीकार किया. पुरुस्कार 33,000 अमरीकी डॉलर का था. अल्बर्ट उस धन से लाम्बारेने में एक नई बिल्डिंग बना सकता था.

सब लोग डॉक्टर बनकर अल्बर्ट श्वाइटज़र जैसे अफ्रीका नहीं जा सकते हैं. पर हम सभी लोग अपनी-अपनी जगह रहकर कुछ नेक कार्य ज़रूर कर सकते हैं. अल्बर्ट के जीवन ने दुनिया को यह सबक ज़रूर सिखाया. शायद आप भी इस पर गंभीरता से कुछ विचार करें.

कभी-कभी समर्पण के बहुत उल्लेखनीय नतीजे मिलते हैं. अस्पताल बनते हैं, बीमारियों का इलाज होता है. परन्तु समर्पण और निष्ठा बहुत सरल भी हो सकती है. समर्पित लोग रोज़मरा की ज़िन्दगी में अपने आसपास के लोगों के प्रति अधिक दयालु और मददगार हो सकते हैं.

दूसरों की सहायता करने और नेक काम करने से हमें, खुद की ज़िन्दगी अधिक सार्थक महसूस होती है. वो हमें एक बेहतर इंसान और अधिक सम्पूर्ण मनुष्य बनाती है - अल्बर्ट श्वाइटज़र की ज़िन्दगी जैसे.

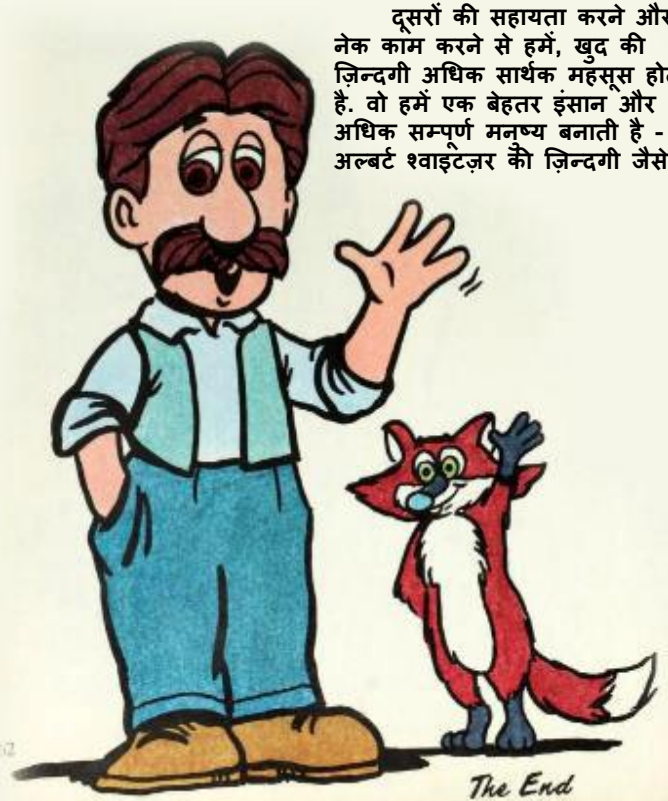

अल्बर्ट श्वाइटज़र ऐतिहासिक तथ्य

अल्बर्ट श्वाइटज़र का जन्म 14 जनवरी 1873 को एल्सेस में हुआ. वो इलाका उस समय जर्मनी में आता था. बचपन में वो बेहद कमज़ोर था. इसलिए अल्बर्ट की माँ को उसे बाहर ले जाते हुए शर्म आती थी. पर माँ ने अल्बर्ट की सेहत का बहुत ख्याल रखा. नतीजा यह हुआ कि जब तक अल्बर्ट दो साल का हुआ वो एकदम स्वस्थ्य हो गया. उसके बाद अल्बर्ट ने पूरी ज़िन्दगी बहुत मेहनत और परिश्रम से काम किया.

अल्बर्ट के पिता एक पादरी थे. उसके घर में गहरा धार्मिक और संगीतमय माहौल था. स्कूल जाने के पहले ही से अल्बर्ट के पिता ने उसे पियानो सिखाना शुरू कर दिया था. जब अल्बर्ट के पैर लम्बे हुए तब उसने चर्च में ऑर्गन बजाने वालों से ऑर्गन वाद्ययंत्र सीखा. वो ऑर्गन बजाने में इतना दक्ष हो गया कि जब वो केवल नौ साल का था तब उसने पहली बार सन्डे चर्च में अकेले ऑर्गन बजाया.

1893 में अल्बर्ट ने, यूनिवर्सिटी ऑफ़ स्ट्रासबोर्ग में दाखिला लिया. एक बार वो छोटी छुट्टी पर घर आया. वो आगे क्या करेगा? इस प्रश्न पर अल्बर्ट ने बहुत गहराई से सोचा. उसने तय किया कि वो सिर्फ वही काम करेगा जो उसे पसंद था. और वो अपनी सारी ज़िन्दगी मानवता की सेवा में बिताएगा. वो अपने इस लक्ष्य से कभी नहीं डिगा. वो बहुत भाग्यशाली था कि उसकी मुलाकात हेलेन ब्रेस्स्लाऊ से हुई. वो एक प्रसिद्ध इतिहासकार की बेटी थीं. हेलेन ने भी अपना जीवन मानवता के भले के लिए समर्पित करने का निर्णय लिया था. जब अल्बर्ट ने कहा कि वो डॉक्टर बनकर अफ्रीका जायेगा तो हेलेन भी एक नर्स जैसे उसके साथ ख़ुशी-ख़ुशी जाने को तैयार हो गई.

1912 में अल्बर्ट ने यूनिवर्सिटी ऑफ़ स्ट्रासबोर्ग से डॉक्टरी की डिग्री प्राप्त की. उसके बाद वो लाम्बारेने, गैबन गया. उस समय गैबन, फ्रांस की एक कॉलोनी थी.

अल्बर्ट ने लाम्बारेने में जो अस्पताल शुरू किया वो बाद में पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हुआ. बहुत से लोगों ने उस अस्पताल के लिए धन और सामान भेजा. पर शुरू में अस्पताल को प्रारंभ करना, अल्बर्ट के लिए एक बड़ा संघर्ष था. वो जब लाम्बारेने, अफ्रीका में था तभी प्रथम-विश्वयुद्ध शुरू हो गया. उसके बाद अल्बर्ट और हेलेन को फ्रांस वापिस जाना पड़ा. उन्हें कैदियों जैसे पहाड़ियों पर एक बौद्ध विहार में नज़रबंद रखा गया. सात साल बाद जब अल्बर्ट अफ्रीका वापिस लौटा तो उसने अपने अस्पताल को बिल्कुल तबाह हालत में पाया. फिर अल्बर्ट ने उसका पुनर्निर्माण किया और विस्तार भी. वो सारी ज़िन्दगी यूरोप वापिस जाता रहा. वहां वो संगीत के कार्यक्रम पेश करता,+ लेक्चर देता और उससे वो लाम्बारेने में अपने अस्पताल के लिए धन जुटाता.

अल्बर्ट श्वाइटज़र न केवल एक डॉक्टर था, वो एक दार्शनिक, धर्म गुरु और बहुत चोटी का संगीतकार भी था. उसने प्रसिद्ध संगीतकार बाख की ज़िन्दगी पर एक किताब भी लिखी. दर्शन पर अपने निबंधों के कारण यूनिवर्सिटीज में उसका बहुत मान-सम्मान होता. पर अफ्रीका में उसके मानवीय कार्य के कारण ही उसे पूरी दुनिया में इज्ज़त और सम्मान मिला. 1952 में उसे नोबल पुरुस्कार मिला.

4 सितम्बर 1965 को लाम्बारेने में, अल्बर्ट श्वाइटज़र का देहांत हुआ.